**पत्र सूचना शाखा**
**सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ0प्र0**

## दक्षिण एशियाई देशों के विकासात्मक अनुभव एक दूसरे के लिये प्रासंगिक हैं - राज्यपाल

लखनऊ: 3 मार्च, 2017

उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री राम नाईक ने आज लखनऊ विश्वविद्यालय के मालवीय सभागार में एथनोग्राॅफिक एण्ड फोक कल्चर सोसाइटी तथा लखनऊ विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र एवं एंथ्रोपोलाॅजी विभाग द्वारा आयोजित 'दक्षिण एशिया में राजनीति, समाज तथा संस्कृति' विषयक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन किया। संगोष्ठी में लखनऊ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 एस0पी0 सिंह, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय दिल्ली के प्रो0 आनन्द कुमार, एथनोग्राॅफिक एण्ड फोक कल्चर सोसाइटी के अध्यक्ष श्री जी0 पटनायक, यूनिवर्सिटी आफ पर्थ, आस्टे्लिया के प्रो0 फ्रांसिस लोबो सहित विश्वविद्यालय के शिक्षक एवं छात्र-छात्रायें उपस्थित थे।

राज्यपाल ने मुख्य अतिथि के रूप में अपने विचार व्यक्त करते हुये कहा कि भारत 1947 में आजाद हुआ और हमारे देश का जनतंत्र सफलतापूर्वक चल रहा है। इतना सफल जनतंत्र अन्य देशों में नहीं है। भारत को विकासशील देश कहा जाता है इसलिये राजनीति, समाज और संस्कृति अपने आप में महत्वपूर्ण घटक हैं। दक्षिण एशियाई देश विचार की दृष्टि से अलग-अलग हो सकते हैं लेकिन उनमें सांस्कृतिक और सामाजिक परम्पराओं में समानता है। इन देशों की सभ्यता और सामाजिक व्यवस्था का एक-दूसरे पर प्रभाव पड़ा है। दक्षिण एशियाई देश शिक्षा, स्वास्थ्य, आतंकवाद और बेराजेगारी जैसी चुनौतियों पर संयुक्त रूप से विचार करें। उन्होंने कहा कि देशों की परिस्थितियाँ भिन्न हो सकती हैं पर आपसी सहयोग से हम प्रगति कर सकते हैं।

श्री नाईक ने कहा कि भारत वसुधैव कुटुम्बकम में विश्वास करता है। उन्होंने संस्कृत के श्लोक को उद्धृत करते हुये कहा कि तेरा और मेरा विचार छोटी सोच वाले लोग करते हैं जबकि उदार चरित्र वाले लोग पूरे विश्व को एक परिवार मानते हैं। विश्व की पुरातन संस्कृति में भारत का यही संदेश है जो संसद के मुख्य द्वार पर लिखा है। बौद्धिक एवं सांस्कृति आदान-प्रदान का हमें लाभ उठाना चाहिये। दक्षिण एशियाई देशों के बीच में विकासात्मक साझेदारी के लिये राजनैतिक समझ होना महत्वपूर्ण है। राजनैतिक संवाद के जरिये इसकी पूर्ति की जा सकती है। सामाजिक आर्थिक विकास को उच्च स्तर पर पहुँचाने हेतु यह आवश्यक है कि हम अपने मूल्यों, विश्वासों तथा सहयोग द्वारा राजनीति से जुडे रहें। उन्होंने कहा कि हमारे विकासात्मक अनुभव एक दूसरे के लिये प्रासंगिक हैं।

एथनोग्राॅफिक एण्ड फोक कल्चर सोसाइटी के अध्यक्ष श्री जी0 पटनायक ने स्वागत उद्बोधन देते हुये कहा कि एशियाई देश अपनी भौगोलिक, सांस्कृतिक तथा राजनैतिक विशिष्टा के लिय जाने जाते हैं। संगोष्ठी में कुलपति प्रो0 एस0पी0 सिंह, प्रो0 आनन्द कुमार, प्रो0 फ्रांसिस लोबो सहित अन्य लोगों ने भी अपने विचार रखे।

---

अंजुम/ललित/राजभवन (78/08)

in South Asia
UCKNOW


in South Asia
FOLK CULTURE SOCIETY, LUCKNOW
in collaboration with
DEPARTMENT OF SOCIOLOGY & DEPARTMENT OF ANTHROPOLOGY
LUCKNOW UNIVERSITY, LUCKNOW
Indian Council of Social
Research and KISS & KIIT University, Bhubaneswar, Odisha
3-5 March, 2017
University of
EMISTRY